पाठ
8

चंद्रशेखर आज़ाद

आज़ादी किसे अच्छी नहीं लगती। चाहे पिंजड़े में बंद पक्षी हो, चाहे रस्सी से बँधा हुआ पशु। सभी परतंत्रता के बंधनों को तोड़ फेंकना चाहते हैं। फिर मनुष्य तो पशुओं की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और संवेदनशील होता है। उसे गुलामी की जंजीर सदा ही खटकती रहती है। सभी देशों के इतिहास में आज़ादी के लिए अपने प्राणों की बलि देने वाले वीरों के उदाहरण हैं।

1947 ई. के पूर्व भारत परतंत्र था। तब अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त करने के प्रयत्न बराबर होते रहते थे। 1857 ई. में ऐसा ही सामूहिक संघर्ष भारतीय लोगों ने किया था। उसके बाद भी यह संघर्ष निरंतर चलता रहा। जनता में आज़ादी की चिनगारी सुलगाने का काम प्रायः क्रांतिकारी किया करते थे। अंग्रेज़ों को भारत से किसी भी प्रकार निकाल बाहर करने के लिए वे कटिबद्ध थे। ऐसे क्रांतिकारियों को जब भी अंग्रेज़ी सरकार पकड़ पाती, उन्हें फाँसी या कालेपानी की सजा देती।

भारत माँ की आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले ऐसे क्रांतिकारियों में चंद्रशेखर आज़ाद का नाम अग्रगण्य है।

बचपन से ही वे बहुत साहसी थे। वे जिस काम को करना चाहते उसे करके ही दम लेते थे। एक बार वे लाल रोशनी देने वाली दियासलाई से खेल रहे थे। उन्होंने साथियों से कहा कि एक सलाई से जब इतनी रोशनी होती है तो सब सलाइयों को एक साथ जलाए जाने से न मालूम कितनी रोशनी होगी। सब साथी इस प्रस्ताव पर खुश हुए, पर किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि इतनी सारी सलाइयों को एक साथ जलाए, क्योंकि रोशनी के साथ सलाई में तेज आँच भी होती है। एक सलाई की आँच झेलना तो कोई बात नहीं थी, पर सब सलाइयों की आँच एक साथ झेलने का खतरा कौन मोल लेता? इस पर चंद्रशेखर सामने आए और उन्होंने कहा कि मैं एक साथ सब सलाइयों को जलाऊँगा। उन्होंने ऐसा ही किया। तमाशा तो खूब हुआ। उनका हाथ भी जल गया; पर उन्होंने उफ् तक नहीं की। जब लड़कों ने उनके हाथ को देखा तो मालूम हुआ कि उनका हाथ बहुत जल गया है। सब लड़के उपचार के लिए दौड़ पड़े, पर चंद्रशेखर के चेहरे पर पीड़ा का

कोई भाव न था और वे खड़े–खड़े मुस्कुरा रहे थे।

प्रारंभ में चंद्रशेखर को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेजा गए, पर उनका मन वहाँ नहीं लगा और वे भागकर अपने बाबा के घर अलीपुर स्टेट पहुँच गए। यहाँ पर उन्हें भीलों से मिलने का मौका मिला, जिनसे उनकी खूब घनिष्ठता हो गई। उन्होंने उनसे धनुष–बाण चलाना सीखा और थोड़े ही दिनों में वे अच्छे निशानेबाज हो गए। उनके बाबा ने जब यह बात सुनी तो उन्हें फिर काशी भेज दिया, जिससे कि कम से कम उन भीलों का साथ तो छूटे।

इस बार वे काशी में टिक गए। काशी में धार्मिक लोगों की ओर से संस्कृत के छात्रों के लिए आवास तथा भोजन की मुफ़्त व्यवस्था थी। ऐसे ही एक स्थान पर रहकर चंद्रशेखर संस्कृत व्याकरण पढ़ने लगे। इसमें भी उनका मन नहीं लगता था। स्वभाव से उन्हें एक जगह टिककर बैठना भी अच्छा नहीं लगता था। इस कारण वे कभी–कभी गंगा में घंटों तैरते, तो कभी कथा बाँचने वालों के पास बैठकर रामायण, महाभारत और भागवत की कथा सुनते थे। वीरों की गाथाएँ उन्हें बहुत पसंद थीं।

चंद्रशेखर जब दस–ग्यारह वर्ष के थे तब जलियाँवाला बाग का भयंकर हत्याकांड हुआ, जिसमें सैकड़ों निरपराध भारतीयों को गोली का शिकार होना पड़ा। जलियाँवाला बाग चारों ओर से ऊँची–ऊँची दीवारों से घिरा एक मैदान था। यहाँ का रास्ता बहुत ही सँकरा था। एक दिन जलियाँवाला बाग में सभा हो रही थी। उसमें ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भाषण हो रहे थे। सभा चल रही थी कि सेना की एक टुकड़ी के साथ अंग्रेज़ जनरल डायर वहाँ आया और उसने बिना कहे–सुने निहत्थी भीड़ पर गोलियाँ चलवाना शुरू कर दिया। कोई एक हज़ार आदमी मारे गए और कई हज़ार घायल हो गए। सारे भारत में क्रोध की लहर दौड़ गई। आज़ाद ने भी इस दर्दनाक घटना का वर्णन सुना। यद्यपि उनकी अवस्था छोटी ही थी तो भी भारतीय राजनीति में उनकी रुचि जग गई और वे भी अंग्रेज़ों के विरुद्ध कुछ कर दिखलाने के उपाय सोचने लगे।

उन्हीं दिनों ब्रिटिश युवराज एडवर्ड भारत आने को थे। काशी आने का भी उनका कार्यक्रम था। कांग्रेस ने तय किया कि उनका बहिष्कार किया जाए। इस संबंध में जब गाँधीजी ने आंदोलन चलाया तो आज़ाद भी इसमें कूद पड़े। यद्यपि वे अभी बालक ही थे, फिर भी पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उनसे कचहरी में मजिस्ट्रेट ने पूछा–

''तुम्हारा नाम क्या है?''

उन्होंने अकड़ कर बताया, ''आज़ाद''।

''तुम्हारे बाप का नाम क्या है?''

''स्वाधीनता''

''तुम्हारा घर कहाँ है?''

''जेलखाना।''

मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दी, ''इसे ले जाओ और पंद्रह बेंत लगाकर छोड़ दो।''

उन दिनों बेंत की सजा देने का ढंग बहुत ही क्रूरतापूर्ण था। इस घटना का उल्लेख जवाहरलाल

नेहरू ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार किया है, ''उसे, नंगा करके बेंत लगाने वाली टिकठी से बाँध दिया गया। बेंत एक–एक कर उसकी पीठ पर पड़ते और उसकी चमड़ी उधेड़ डालते, पर वह हर बेंत के साथ चिल्लाता, ''महात्मा गाँधी की जय।'' वह लड़का तब तक नारा लगाता रहा, जब तक वह बेहोश न हो गया।'' इस घटना के बाद ही चंद्रशेखर नामक वह बालक 'आज़ाद' के नाम से विख्यात हो गया।

उन्हीं दिनों भारत के क्रांतिकारी अपना संगठन बना रहे थे। चंद्रशेखर आज़ाद उनसे अधिक प्रभावित हुए और वे भी दल में शामिल हो गए। क्रांतिकारियों का कहना था कि अंग्रेज अहिंसात्मक रीति से नहीं मानेंगे। उनको भय दिखाकर छोड़ने के लिए मज़बूर करना होगा। चंद्रशेखर आज़ाद जिस क्रांतिकारी दल के सदस्य बने, वह बड़ा था और सारे भारत में उनकी शाखाएँ फैली थीं।

क्रांतिकारी दल के सामने बहुत–सी व्यावहारिक समस्याएँ थीं। सबसे बड़ी समस्या यह थी कि संगठन के लिए धन कहाँ से मिले। इसलिए दल की ओर से सन् 1925 ई. में उत्तरप्रदेश में 'काकोरी' स्टेशन के निकट चलती गाड़ी को रोककर सरकारी खज़ाना लूट लिया गया।

इस घटना के होते ही ब्रिटिश सरकार की ओर से गिरफ्तारियाँ होने लगीं, पर आज़ाद गिरफ्तार न हो सके। उन्हें पकड़ने के लिए बड़ा इनाम घोषित किया गया। आज़ाद ने भी ठान लिया था कि मुझे कोई जीवित नहीं पकड़ सकेगा, मेरी लाश को ही गिरफ्तार किया जा सकता है। वे आस–पास के स्थानों में छिपे रहे और गोली चलाने का अभ्यास करते रहे।

'काकोरी–षड्यंत्र' के मुकदमे में रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह, अशफ़ाकउल्ला और राजेंद्र लाहिड़ी को फाँसी हो गई।

अब उत्तर भारत के क्रांतिकारी दल के नेतृत्व का पूरा भार आज़ाद पर आ पड़ा। उन्हें इस संबंध में भगतसिंह आदि कई योग्य साथी मिले। संगठन का काम जोरों से होने लगा। इन्हीं दिनों ब्रिटिश सरकार ने विलायत से साइमन की अध्यक्षता में एक आयोग भेजा। जब यह आयोग लाहौर पहुँचा तो सभी दलों ने इसके विरुद्ध प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में वयोवृद्ध नेता लाला लाजपतराय को लाठी की खतरनाक चोटें आईं। इन्हीं चोटों के कारण कुछ दिनों के बाद उनका प्राणांत हो गया। इससे देश का वातावरण बहुत विक्षुब्ध हो गया। चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु आदि ने यह तय किया कि लालाजी की हत्या के लिए ज़िम्मेदार स्काट या सैंडर्स को मार डालना चाहिए। 07 सितम्बर, 1928 ई. को इन लोगों ने पुलिस सुपरिंटेंडेट सैंडर्स को गोलियों से भून डाला। पर इनमें से कोई भी पकड़ा न जा सका।

सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने सरकार की दमन–नीति का विरोध करने के लिए 08 अप्रैल, 1929 को सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली के मंच पर बम फेंका। इंकलाब ज़िंदाबाद का नारा लगाते हुए वे गिरफ्तार हो गए। अंग्रेज़ सरकार ने उनको लाहौर जेल में फाँसी दे दी।

आज़ाद ने आज़ादी की जंग जारी रखी। 27 फरवरी 1931 की बात है। दिन के दस बजे थे। आज़ाद और सुखदेव राज इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में बैठे थे। इतने में दो पुलिस अधिकारी वहाँ आये। उनमें से एक आज़ाद को पहचानता था। उसने दूर से आज़ाद को देखा और लौटकर खुफिया पुलिस के सुपरिंटेंडेंट

नॉट बावर को उसकी खबर दे दी। नॉट बावर इसकी खबर पाते ही तुरंत मोटर द्वारा अल्फ्रेड पार्क में पहुँचा और आज़ाद से दस गज के फासले पर उसने मोटर रोक दी। पुलिस की मोटर देखकर आज़ाद का साथी तो बच निकला, किंतु वे स्वयं वहीं रह गए। नॉट बावर आज़ाद की ओर बढ़ा। दोनों तरफ से एक साथ गोलियाँ चलीं। नॉट बावर की गोली आज़ाद की जाँघ पर लगी तो आज़ाद की गोली नॉट बावर की कलाई पर, जिससे उसकी पिस्तौल छूटकर गिर पड़ी। उधर और भी पुलिस वाले आज़ाद पर गोली चला रहे थे। हाथ से पिस्तौल छूटते ही नॉट बावर एक पेड़ की ओट में छिप गया। आज़ाद के पास हमेशा काफी गोलियाँ रहती थीं, जिनका इस अवसर पर उन्होंने खूब उपयोग किया। नॉट बावर जिस पेड़ की आड़ में था, आज़ाद मानो उस पेड़ को छेदकर नॉट बावर को मार डालना चाहते थे।

पूरे एक घंटे तक दोनों ओर से गोलियाँ चलती रहीं। कहते हैं, जब आज़ाद के पास गोलियाँ खत्म होने लगीं, तो अंतिम गोली उन्होंने स्वयं अपने को मार ली। इस प्रकार वह महान योद्धा मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर सदा के लिए सो गया। अपनी यह प्रतिज्ञा उन्होंने अंत तक निभाई कि वे कभी जिंदा नहीं पकड़े जाएँगे।

जब आज़ाद का शरीर बड़ी देर तक निस्पंद पड़ा रहा तब पुलिस वाले उनकी ओर आगे बढ़े। आज़ाद का आंतक इतना था कि उन्होंने पहले एक गोली मृत शरीर पर मारकर निश्चय कर लिया कि वे सचमुच मर गए हैं।

आज़ाद जिस स्थान पर शहीद हुए, वहाँ उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है। वहाँ जाने वाला हर व्यक्ति उस वीरात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता है, जिसने अपनी जन्मभूमि की पराधीनता की बेड़ियों को काटने के लिए अपना जीवन सहर्ष बलिदान कर दिया।

—मन्मथनाथ गुप्त

शब्दार्थ

कचहरी	–	न्यायालय	क्रूरतापूर्ण	–	निर्दयता पूर्ण
मजिस्ट्रेट	–	न्यायाधीश	स्वाधीनता	–	आज़ादी, स्वतंत्रता
विक्षुब्ध	–	व्याकुलतापूर्ण, परेशान	अहिंसात्मक	–	हिंसारहित, शांतिपूर्वक
पुलिस सुपरिंटेंडेंट	–	पुलिस अधिकारी	षड्यंत्र	–	साजिश

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. क्रांतिकारियों ने सरकारी खज़ाना किस उद्देश्य से लूटा था?
2. अंग्रेज़ क्रांतिकारियों को पकड़कर किस प्रकार की सजा देते थे?
3. चंद्रशेखर को संस्कृत पढ़ने के लिए कहाँ भेजा गया?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. क्रांतिकारियों में अपने प्राणों की आहुति देने वाले अग्रगण्य थे–
   (क) अज्ञेय (ख) चंद्रशेखर आज़ाद
   (ग) राजेन्द्र लाहिड़ी (घ) इनमें से कोई नहीं ( )
2. मजिस्ट्रेट ने कचहरी में चंद्रशेखर से पिता का नाम पूछा तो चंद्रशेखर ने अपने पिता का नाम बताया–
   (क) पंडित सीताराम (ख) राम प्रसाद बिस्मिल
   (ग) स्वाधीनता (घ) स्वतंत्रता ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. 07 सितम्बर, 1928 ई. को इन लोगों ने..... को गोलियों से भून डाला।
2. मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दी, ''इसे ले जाओ और.....लगाकर छोड़ दो?

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. आज़ाद ने धनुष–बाण चलाना किससे सीखा था?
2. जलियाँवाला बाग हत्याकांड का आज़ाद पर क्या प्रभाव पड़ा ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. क्रांतिकारी दल के सामने क्या समस्या थी ?
2. आज़ाद की किस घटना से नेहरू जी प्रभावित हुए थे ?
3. काकोरी षड्यंत्र के मुकदमे में किस–किस को फाँसी की सजा हुई थी।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कचहरी में मजिस्ट्रेट व आज़ाद के संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।
2. उस घटना का वर्णन कीजिए जिससे बालक चन्द्रशेखर की बहादुरी प्रदर्शित होती है ?

भाषा की बात

1.(क) धर्म शब्द मे 'इक' प्रत्यय जुड़ने पर धार्मिक बनता है। आप भी ऐसे शब्द छाँटकर मूल शब्द व प्रत्यय अलग–अलग लिखिए।

(ख) 'इक' प्रत्यय जुड़ने पर मूल शब्द के आरम्भिक अक्षर में आए परिवर्तन की जानकारी प्राप्त कीजिए।

2. पाठ में कई विशेषण शब्द आए हैं, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

3. इन शब्दों को पढ़िए– संयोग, संविधान। इन दोनों शब्दों में अनुस्वार (ं) का प्रयोग हुआ है। वास्तव में ये सम्+योग, सम्+विधान हैं। इन्हें सन्योग, सम्विधान लिखना ठीक नहीं है। य, र, ल, व, श, ष, स, ह इन आठ वर्णों से पूर्व यदि सम् उपसर्ग जुड़ा हो तो ये 'सं' द्वारा ही दर्शाए जाते हैं, जैसे– संयोग, संरचना, संसार आदि।

इसी नियम को ध्यान में रखकर निम्नलिखित शब्दों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए–

सम्+शय

सम्+हारक

सम्+स्मरण

सम्+शोधन

पाठ से आगे

1. चन्द्रशेखर 'आज़ाद' के जीवन से आपको क्या सीखने को मिला? अपने विचार लिखिए।
2. हमारे देश में आज़ाद की तरह अन्य कई क्रांतिकारी हुए हैं, उनकी जानकारी ऐसी सारणी बनाकर भरिए –

क्रांतिकारी का नाम	किए गए विशेष कार्य/योगदान

3. "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।" यह नारा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने दिया था। आप भी ऐसे नारे और उन्हें देने वाले महापुरुषों के नाम लिखिए।

यह भी करें

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों के चित्रों का संग्रह कर 'मेरा संकलन' में लगाएँ।

तब और अब

पुराना रूप	विरुद्ध	वयोवृद्ध	नहीँ	गोलियोँ
मानक रूप	विरुद्ध	वयोवृद्ध	नहीं	गोलियों

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

संकट आने पर धर्म, धैर्य तथा सत्य का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

केवल पढ़ने के लिए

अशफ़ाक उल्ला खाँ का पत्र

मेरे प्यारे देशवासियो!

भारत माता को आज़ाद करवाने के लिए रंगमंच पर हम अपनी भूमिका अदा कर चुके हैं। गलत किया या सही, हमने जो भी किया, स्वतंत्रता पाने की भावना से प्रेरित होकर किया। हमारे अपने निंदा करें या प्रशंसा, लेकिन हमारे दुश्मनों तक को हमारी हिम्मत और वीरता की प्रशंसा करनी पड़ी। कुछ लोग कहते हैं कि हमने गुलामी को न सहा और देश में आतंकवाद फैलाना चाहा पर यह सब गलत है। हमारे कितने ही साथी आज भी आज़ाद हैं, फिर भी हमारे किसी साथी ने कभी भी किसी नुकसान पहुँचाने वाले तक पर गोली नहीं चलाईं। हिंसा करना हमारा उद्देश्य नहीं था। हम तो आज़ादी हासिल करने के लिए देश में क्रांति लाना चाहते थे।

सरकार भी अंग्रेजों की और जज भी अंग्रेज़ों के, फिर न्याय की माँग किससे करें। जजों ने हमें निर्दयी, बर्बर, मानवता पर कलंक आदि विशेषणों से पुकारा है। हमारे शासकों की क़ौम के जनरल डायर ने निहत्थों पर गोलियाँ चलवाईं। बच्चों, बूढ़ों, स्त्री–पुरुषों सब पर दनादन गोलियाँ दागी गईं। तब इंसाफ़ के इन ठेकेदारों ने अपने भाई बंधुओं को किन विशेषणों से संबोधित किया था। फिर हमारे साथ ही यह सुलूक क्यों ?

हिंदुस्तानी भाइयो! आप चाहे किसी भी धर्म या संप्रदाय के मानने वाले हों, देश के काम में साथ रहो। आपस में व्यर्थ न लड़ो। रास्ते चाहे अलग हों, लेकिन उद्देश्य तो सबका एक ही है। सभी कार्य एक ही उद्देश्य की पूर्ति के साधन हैं। एक होकर देश की नौकरशाही का मुकाबला करो। अपने देश को आज़ाद कराओ।

देश के 7 करोड़ मुसलमानों में मैं पहला मुसलमान हूँ, जो देश की आज़ादी के लिए फाँसी पर चढ़ रहा हूँ। यह सोचकर मुझे गर्व महसूस होता है।

सभी को मेरा सलाम। हिंदुस्तान आज़ाद हो। सब खुश रहें।

आपका भाई,
अशफ़ाक

अशफ़ाक उल्ला खाँ 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के संस्थापकों में से एक थे, जिनका उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष कर भारत माँ को आज़ाद कराना था। जब उन्हें काकोरी कांड में फाँसी की सज़ा सुनाई गई, तब उन्होंने कहा कि यह एक विडंबना है कि जो हमें सालों से लूटते आए हैं, वे हमें लूट के अपराध में सज़ा सुना रहे हैं। काकोरी कांड में चार क्रांतिकारियों को फाँसी हुई – रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह और राजेंद्र लाहिड़ी।

अशफ़ाक उल्ला खाँ ने यह पत्र फाँसी के तख़्ते पर चढ़ने से तीन दिन पहले लिखा। वे शब्द जो उन्होंने फाँसी के तख्ते पर चढ़ते हुए बोले थे, आज भी हमारे कानों में गूँज रहे हैं – ''मैंने कभी किसी आदमी के खून से अपने हाथ नहीं रंगे। मेरा इंसाफ़ ख़ुदा के सामने होगा।''